# 'राधा तत्त्व'

ऋग्वेद मे राधा शब्द सातों विभक्तियो मे आया है –
यथा –
राधः । [१·९·५ प्रथमा]
राधांसि । [१·२·२८ द्वितीया]
राधसा । [१·४८·१४ तृतीया]
राधसे । [१·१७·७ चतुर्थी]
राधसः । [१·१५·५ पंचमी]
राधसाम् । [८·९०·२ षष्ठी]
राधसि । [४·३२·१ सप्तमी]

१- ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिवा सोम मृतूरनु तवेद्धि सख्यमास्ततम् [ऋ·१०·१४·५]

अर्थात् हे श्री कृष्ण ! तुमने राधा जी से प्रेम रस रूपी सोम का पान किया ।

२- इदं ह्यन्वोजसा सुतं राधानां पते पिवा त्वस्य गिर्वणः ।[ऋ·]
हे श्री कृष्ण ! जैसे गोपियाँ आपका वरण करती हैं, वैसे ही श्रुतियाँ भी आपका वरण करती हैं। उनके द्वारा पयोदध्यादि सोम रस का पान करें ।

३- विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः सवितारं नृचक्षसम् । [ऋ·]
अर्थात् हे सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, साक्षी तथा राधा जी को गोपियों से पृथक् ले जाने वाले श्री कृष्ण ! हम तुमको अपनी रक्षा के लिए बुलाते हैं।

राधा नाम भागवत में भी है –
स्वराधसा ब्रह्माणि रंस्यते नमः । [भा·]
योगमायामुपाश्रितः । [भा·]

फिर इन्हीं वेदव्यास द्वारा प्रणीत 'पद्म पुराण' 'ब्रह्मवैवर्त पुराण' 'भविष्य पुराण' 'देवी भागवत पुराण' आदि में विशद वर्णन है। प्राचीनतम ग्रंथ 'नारद पांचरात्रम्' मे भी राधा का वर्णन है। और फिर एक 'राधोपनिषद' भी है।

राधा के प्रति वैष्णवाचार्यों का मत —

बल्लभाचार्य का मत है — राधा स्वयं ब्रह्म हैं अतः राधाकृष्ण में अभेद है।

निम्बार्काचार्य का मत है — राधा ब्रह्म शरीर की शक्ति है और शक्ति शक्तिमान् से भिन्न भी होती है। अभिन्न भी होती है अतएव भेदाभेद है।

निम्बार्काचार्य एवं चैतन्यदेव के भेदाभेद का अन्तर —

निम्बार्क राधाकृष्ण को दो मानते है और दोनों को एक दूसरे का प्रतिबिम्ब मानते हैं अतएव भेदाभेद मानते हैं। यह उनका भेदाभेद है।

'चैतन्यदेव' राधाकृष्ण को पूर्णतः भिन्न एवं पूर्णतः अभिन्न मानते हैं क्योंकि ब्रह्म विरुद्ध धर्माश्रय है।

राधा शब्द की व्युत्पत्ति —

राधयति अर्थात् आराधयति। [सनातन गोस्वामी]

राध्नोति अर्थात् समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली।

[देवी भा. पु.]

अनाद्योऽयं पुरुष एक एवास्ति तदेव द्विधा रूपं विधाय सर्वान् रसान् समाहरति। स्वयमेव नायिका रूपं विधाय समाराधन तत्परोऽभूत्। तस्मात् तां राधां रसिकानंदां वेदविदो वदन्ति।

[शतपथ ब्राह्मण, सामरहस्य श्रुति]

एकंज्योतिरभूद् द्वेधा राधामाधवरूपकम् । [ऋक् परि॰]
राधया सहितो देवो माधवेनैव राधिका । अनयोर्भेदं पश्यति
संसृतेर्मुक्तो न भवति । [राधा तापनी उपनि॰]
राधया माधवो देवो माधवेनैव राधिका ।
[ऋग्वेद आश्वलायन शाखा परिशिष्ट]

~~स्वसधरमा ब्रह्माणि रंस्यते नमः । [भा॰]~~

निरस्तसाम्यातिशयेन राधसा, स्वधामनि ब्रह्माणि रंस्यते नमः [भा॰]
योग मायामुपाश्रितः । [भागवत]

# 'वेदे उपासना'

यो देवमुत्तरावंतमुपासाते सनातनम् । [अथर्ववेद]
अर्चा शक्राय शाकिने । [ऋ०]
वंदामहे त्वा । [ऋ०]
मरुत्वंत सख्याय हवामहे । [ऋ०]
भर्गो देवस्य धीमहि । [ऋ०]
अग्निं विश ईलते । [ऋ०]
अग्ने स्तोमं मनामहे । [ऋ०]
अराधि होता । [ऋ०]
त्र्यम्बकं यजामहे । [ऋ०]
तमु स्तोतारः पूर्व्यं यथाविद, ऋतस्य गर्भं जनुषापिपर्तन।
आस्य जानंतो नाम चिद्विवक्तन महस्ते विष्णो सुमतिं भजामहे ॥ [ऋ०]
ब्रह्मैतदुपास्स्वैतत्तपः । [तैत्तिरी०]
यस्य देवे परा भक्तिः । [श्वेता०]
अहरहः सन्ध्यामुपासीत । [मण्डल ब्राह्मण]
प्रतिकृतिं कृत्वा यथालाभमर्चयेत । [बौधायन कल्पसूत्र]